अनुभव

eY;kdu l tM fpjLej.kh; vuHko

fdju non*

शिक्षा से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की उपयोगिता केवल विद्यार्थियों ही नहीं बल्कि शिक्षक, शिक्षाविद् और शैक्षिक प्रशासकों के लिए भी है। ऐसी चर्चाओं के दौरान सभी को कुछ-न-कुछ सीखने का अवसर ज़रूर मिलता है। शिक्षा जगत से जुड़े लोगों के साथ अपने अनुभव बाँटना और उनके अनुभवों से बहुत कुछ नया सीखना किस प्रकार एक चिरस्मरणीय अनुभव बन जाता है, जानने के लिए पढ़िए यह लेख- मूल्यांकन से जुड़े चिरस्मरणीय अनुभव।

मई 2010 में 14 व्यक्तियों का एक समूह (जिसमें राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली तथा हिमाचल प्रदेश, उड़ीसा, तमिलनाडु और आंध्रप्रदेश के राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् तथा सर्वशिक्षा अभियान के अधिकारी सम्मिलित थे) उत्तरी अमेरिका के शैक्षिक दौरे पर गया।

विक्टोरिया (कैनेडा) में हमने एक बड़े अंर्तराष्ट्रीय मूल्यांकन सम्मेलन में भाग लिया। इस सम्मेलन में चार दिनों तक अकादमिक के साथ-साथ अन्य मानवीय गुणों को देखकर एक सुखद अनुभव हुआ। यहाँ छोटी उम्र के व्यक्तियों का सम्मान किया जाता देख हमें अचंभा हुआ।

27 वर्षीय साइमन जैकसन द्वारा सम्मेलन का उद्घाटन किया गया। यह वह व्यक्ति हैं जिन्होंने 7 वर्ष की आयु से 'स्पिरिट बीयर' को बचाने का अपना सपना साकार किया। तीसरे दिन मूल्यांकन पर शोधकार्य करने वाले युवाओं के लिए 'ऑन द स्पॉट प्रतियोगिता' रखी गई। इसमें जीतने वाले तो प्रोत्साहित हुए परंतु जो भाग नहीं ले पाए या जीत नहीं पाए, उनकी आशा आने वाले सम्मेलनों में भाग लेने की बनी रही। मूल्यांकन सम्मेलन में भाग ले रहे हर प्रतिभागी को सम्मान तथा उनकी बात पर ध्यान दिया जाता था। एक-दूसरे के साथ वैयक्तिक तौर पर चर्चा कर पाना हमेशा संभव था।

सभी प्रतिभागियों के साथ 'ओशन क्रूज़' में जाना एक बहुत सुंदर अनुभव था। समुद्र की असीमित गहराई और सीमा में मन और मस्तिष्क खो-सा गया। सभी प्रतिभागी एक-दूसरे से अच्छी चर्चा कर पाए। वापसी में रोशनी से सजे

* *प्रोफ़ेसर*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली-110016

(*प्रोफ़ेसर*, देवेंद्र चौधरी, *सम-कुलपति*, इंदिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय तथा डॉ. जयश्री ओझा, टेक्निकल सपोर्ट एजेंसी के प्रति चर्चाओं के लिए आभार)

भवनों, होटलों, विक्टोरिया की संसद तथा वैनकूवर के समुद्री तट को देखकर भरपूर खुशी मिली।

सम्मेलन का समापन समारोह बहुत सारे मूल्यों को स्वयं में समेटे अनेक संदेश बहुत खूबसूरती से दे गया। कोई भी सम्मेलन सभी के मिलेजुले परिश्रम की वजह से कामयाब हो पाता है। कोई भी काम बड़ा या छोटा नहीं होता। हर व्यक्ति का प्रयत्न कामयाबी की ओर कदम बढ़ाता है। हर व्यक्ति जो भी सम्मेलन से जुड़ा था, वह अपने बारे में नहीं, सम्मेलन की सफलता के बारे में सोच रहा था। समापन समारोह में भी कुछ ऐसा ही नज़र आया। समापन समारोह में ही घोषणा की गई कि अगला मूल्यांकन सम्मेलन एडमिंटन में आयोजित किया जाएगा। जब सम्मेलन का झंडा एडमिंटन में सम्मेलन आयोजन करने वाले समूह को दिया गया तो झंडा देने वाली तथा उसे लेने वाली दोनों ही टीमों में शत-प्रतिशत मानसिक, शारीरिक व रूहानी का तालमेल दिखा। विक्टोरिया सम्मेलन टीम खुश थी कि सम्मेलन हर प्रकार से सफल रहा तथा एडमिंटन वाली टीम खुश थी कि उसे सम्मेलन आयोजन करने के काबिल समझा गया। दोनों टीमें एक-दूसरे के लिए भी खुश थीं।

विक्टोरिया से हम ओटावा विश्वविद्यालय पहुँचे। यहाँ हम प्रो. ब्रैड कज़िंस से उनके मूल्यांकन की सोच तथा शोध के बारे में परिचित थे। उनका विश्वास भागीदारी से जुड़े मूल्यांकन में हैं। उनके सभी सत्रों में हम सभी ने भाग लिया और चर्चा भी अच्छी रही। अन्य सत्र ठीक थे। जिन पर हम सभी कुछ-न-कुछ टिप्पणी करते रहे। एक सत्र 'भावुकता से जुड़ी समझ' में हमें यह लगा कि कभी भी नकारात्मक उदाहरणों से शुरू कर उन पर बहुत अधिक समय देना उचित नहीं है। सत्र की शुरुआत सकारात्मक होकर एक-दो नकारात्मक उदाहरण देने के बाद वापिस सकारात्मक उदाहरणों और सोच पर आना बेहतर होता है, अन्यथा शुरू से लगातार नकारात्मक उदाहरण सुनते-सुनते सुनने वालों के मन और मस्तिष्क पर बोझ बन जाता है।

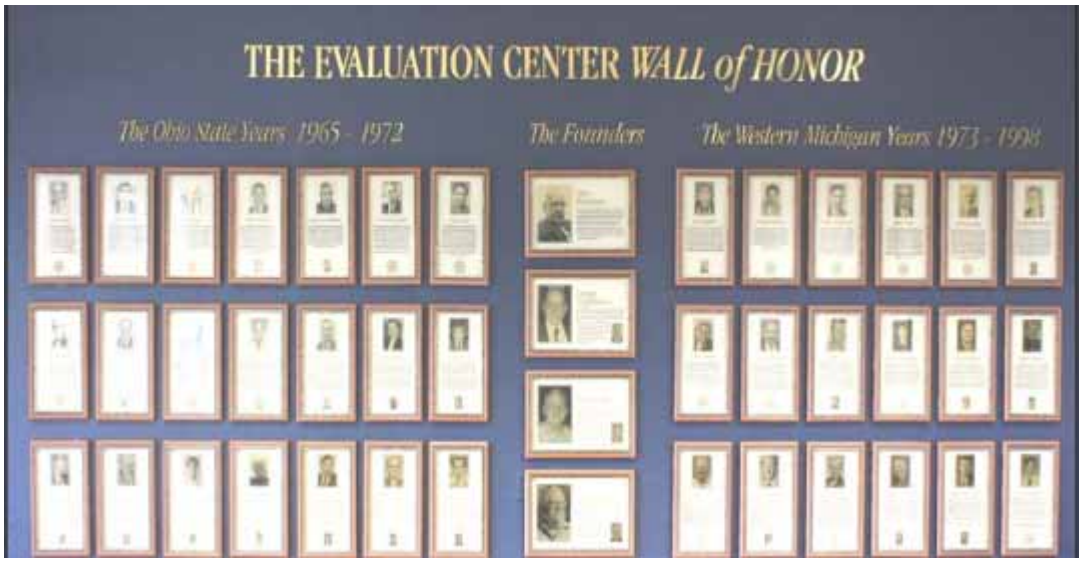

वेस्टर्न मिशिगन विश्वविद्यालय पहुँच कर सभी बहुत उत्साहित थे क्योंकि यहाँ के मूल्यांकन केंद्र को विश्व में सबसे पहला केंद्र होने के इतिहास रचने का गौरव प्राप्त है। यहाँ प्रो. क्रिस कोरिन के सारे सत्र रोचक तथा प्रभावी रहे। जहाँ हमें किसी विषय को समझने में कठिनाई प्रतीत होती, उसे भाँपते ही वे अनेक प्रकार से समझाने का प्रयत्न करते। जब लगातार काफ़ी देर तक चर्चा करने पर प्रो. कोरिन थकते तो समूह के लीडर प्रो. वशिष्ठ अपना योगदान देते। इससे प्रो. कोरिन खुश होते और बार-बार प्रो. वशिष्ठ के मूल्यांकन संबंधी ज्ञान तथा समझ से खुश और अचंभित होते। केंद्र में 'वॉल ऑफ ऑनर' पर उन सभी व्यक्तियों के चित्र और उनके बारे में छोटी टिप्पणी हैं, जिन्होंने आज के मूल्यांकन की सोच-समझ की नींव रखीं। इसे देखकर सभी मूल्यांकन से जुड़े युवाओं का सपना रहता होगा कि उनका नाम भी वहाँ हो। इसके साथ ही यह संदेश सबके लिए था कि हर व्यक्ति का किया योगदान याद रखना ज़रूरी है। हमें प्रो. डैनियहन स्टफलबीम से मिलने का अवसर मिला। यह 'वॉल ऑफ ऑनर' के तीन नींव रखने वालों में से एक हैं।

85 वर्ष की आयु में एक कटी हुई टाँग, एक हाथ में बँधी पट्टी के बावजूद अपनी व्हील चेयर पर मूल्यांकन केंद्र पहुँचे।

वे हम सब को बाँटने के लिए अपने शोध कार्य का बड़ा बस्ता भी लाए थे। बाद में हमें पता चला कि प्रो. स्टफलबीम अपने फार्म से अपनी बैटरी से चलने वाली कार स्वयं चला कर आए थे। प्रो. स्टफलबीम से मिलना एक न भूलने वाला अनुभव रहा जिसमें कई संदेश मिले, कष्ट की परवाह न कर अपने काम को समय पर करना, प्रतिष्ठा मिलने के बाद भी अपने अकादमिक सहयोगियों के प्रति आदर रखना और हर किसी के अनुभव और योगदान की सराहना करना। इन्होंने समूह के लीडर तथा समूह के प्रत्येक सदस्य की हर बात को बहुत ध्यान से सुना और सराहा। समूह के लीडर को बहुत सुंदर ई-मेल भेज कर उनकी मूल्यांकन और स्पष्टता की तारीफ़ करते हुए यह विश्वास जताया कि एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा किए जा रहे चारों मूल्यांकन अध्ययन सही दिशा में चल रहे हैं। प्रो. स्टफलबीम इन चारों अध्ययनों के सलाहकार हैं।

हमारा आखिरी पड़ाव लॉस एंजलिस के कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में था। वहाँ प्रो. क्रिस्टीना क्रिस्टी के व्याख्यान द्वारा नए तरीके के मूल्यांकन की जानकारी हुई। प्रो. क्रिस्टीना क्रिस्टी की मूल्यांकन के प्रति समझ में गहराई और अनोखापन था। उनकी प्रस्तुति के बाद हमें यह अच्छी तरह समझ में आया कि मूल्यांकन की रिपोर्ट तैयार करना हो या कहीं उसकी चर्चा करनी हो तो फ्लोचार्ट, तालिका, सांख्यिकी को बहुत अधिक बल नहीं दिया जाना चाहिए। इससे बोरियत के साथ मस्तिष्क तथा आँखों पर बहुत ज़ोर पड़ता है। प्रो. एलकिंस तथा किस्टीना के मूल्यांकन सिद्धांत से सभी प्रभावित थे। प्रो. क्रिस्टीना की सोच और समझ (तकरीबन हर उस व्यक्ति के बारे में जिसका नाम इस वृक्ष की शाखाओं या तने पर था) ने हमें अचंभित किया। विश्वविद्यालय का ऐतिहासिक परिसर, छः सबसे पहली बनी इमारतें तथा नई इमारतें देखने का अवसर मिला। पूरे परिसर में किस्म-किस्म के सैंकड़ों फूल, फव्वारे, छोटे-छोटे तालाब, पानी की धाराएँ आदि देखकर हमारी थकावट गायब हो गई। विक्टोरिया, ओटावा, कलामज़ू तथा लॉसऐंजलिस में अकादमिक के

साथ-साथ प्राकृतिक सुंदरता के अनुभवों से मन बहुत खुश रहा। आज भी हम प्राकृतिक सुंदरता के बारे में सोचते हैं तो बहुत अच्छा लगता है। इस दौरान तीन ऐसे अवसर आए जिसमें हमें मानवीयता के गुणों का सुंदर अनुभव हुआ। एयर कैनेडा और एयर अमेरिका की उड़ानों में किसी यात्री को कुछ खाने-पीने की सामग्री लेने पर क्रेडिट कार्ड से ही रकम देनी पड़ती है, डालर नहीं लेते। एक बार इनका कॉम्पलिमैंटरी ड्रिंक, चाय या सेब, टमाटर का जूस हज़म होने पर जब तेज़ भूख लगती तब कठिन समस्या हो जाती तीन बार फ्लाईट इनचार्जों ने हमारी मुश्किल समझ कर छोटे-छोटे प्रयास किए जिससे हमारी लंबी हवाई यात्राएँ (5-6 या 2½ घंटे की) चॉकलेट या काजू खाकर पूरी हो पाई और भूख की घबराहट कम हो गई। यह तभी संभव हो पाया जब इन तीनों ने अपनी नौकरी की परवाह कम करते हुए मूल्यों की ओर अधिक ध्यान दिया।

❑❑❑